महीयसी महादेवी का काव्य दर्शन

दर्शन काव्य की वैचारिक पृष्ठभूमि निर्मित करता है तथा, जीवन, जगत एवं कवि के स्वतः को जोड़ने वाला सूत्र भी यही है । रहस्यवादी कविता में आध्यात्म एवं चिन्तन का समावेश दर्शन से ही सम्भव होता है । अतः रहस्यवादी रचनाकार अनुभूति के क्षणों में दार्शनिक की तरह परम सत्ता से जुड़ता हुआ सा प्रतीत होता है । काव्य में दर्शन के प्रभाव की छाया कवि के व्यापक अध्ययन एवं प्रतिभा सम्पन्न युगदृष्टा कवि को शिक्षा के अभाव में भी दर्शन का प्रकाश सम्भवतः युगीन विचारों एवं अपने स्वयं योग अनुभव से प्राप्त हुआ होगा । 'जल में कुम्भ कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी' तथा 'आदि गगना मध्यै गगना अन्तै गगना भो' में घटाकाश और कुम्भ एवं जल के सादृश्य से तत्वज्ञान प्रकट करने वाले कवि ने 'मसि कागज' का स्पर्श नहीं किये था, यह विश्वास सहसा नहीं होता । कबीर, जायसी आदि अल्पशिक्षित कवि की रचना में जब दर्शन का तत्व विद्यमान है तो महादेवी जैसी उच्च शिक्षा प्राप्त कवयित्री में बौद्ध दर्शन, वेदान्त दर्शन एवं योगिराज अरविन्द के नव्य वेदान्त दर्शन का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है ।

भारतीय साहित्य शास्त्र में रस को ब्रह्म स्वरूप माना गया है जो आनन्द का पर्याय है । काव्य सृजन में प्राप्त होने वाला आनन्द अन्ततः पाठक अथवा सहृदय व्यक्ति का आनन्द हो जाता है । कवि की आत्मानुभति की पूर्ण सौन्दर्य दर्शन लालसा तथा तज्जनित विरह की अनुभति को रहस्यवाद कहा जाता है । अपूर्ण (आत्मतत्व) और सम्पूर्ण (परमतत्व) के सम्मेलन के आनन्द की कामना से कवि निरन्तर सृजन हेतु प्रवृत्त रहता है । आनन्द की अभाव–स्थिति जन्य वेदना कविता में करूणा अथवा वेदना का रूप लेती है । लौकिक अनुभूति की सीमा में इस वेदना को प्रिय–विरह की वेदना मानकर कवि इसे अभिव्यंजना प्रदान करता है –

'विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात
वेदना में जन्म करूणा में मिला आवास ।

(यामा – नीरजा ' पृ0 142)

कविता में दर्शन कवि का जीवन दर्शन बनकर आता है । कवयित्री महादेवी की जीवन यात्रा जिसे उन्होंने 'साधना कहा है, में विरह का चित्रण अधिक है किन्तु उन्होंने इसे पारलौकिकता की लौकिक अनुभूति कहा है । 'नीर भरी दुःख की बदली, 'दीपशिखा' आदि प्रतीक भी काव्य–दर्शन का संकेत देते हैं ।

वेदना जीवन की अतल संचेतना है । उसे जीवन – दर्शन की कराल कारा की मधुर निर्झरिणी कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी । महादेवी जी ने अपनी काव्य–साधना में इसी निर्झरिणी के बिन्दु संचित किये हैं । इनके मार्मिक निदर्शन में कवयित्री के हृदय का मधुर सत्य भरा हुआ है –

'प्रिय जिसने दुःख पाला हो ।
वर दो यह आँसू उसके उर की माला हो ।'

(यामा–नीरजा – 107)

महादेवी की साधना का क्षण–अनुक्षण अव्यक्त से जुड़ा रहता है । अपने गीतों को वे अनुश्वर तथा गीत के स्वर को नश्वर मानती है –

'जब असीम से हो जायेगा मेरी लघु सीमा का मेल ।

देखोगे तुम देव अमरता खेलेगी मिटने का खेल ।।

अमरता असीम का गुण है तथा 'लघु सीमा साधिका की अस्मिता । साधिका द्वारा जिया जाने वाला जीवन मिटने का खेल है । उनकी वीणा से निःसृत विरह वेदनाका करूणा स्वर नारी सुलभ कोमलता और सरलता से प्रसूत होकर कबीर की साधना सदृश हो जाता है । उनकी तन्मयता एवं भाव विदग्धता सराहनीय है । वर्जिल ने एण्ड्रोमेकी की प्रशंसा में सच ही लिखा था कि –

'तुम शान्तिमय कोमलता की अनन्त सरिता हो,

जिसकी माधुरी प्रत्येक शताब्दी की ललनाओं के कंठ का वरदान बना करती है।' महादेवी के सम्बन्ध में भी वर्जिल के ये कथन चरितार्थ होते हैं ।

भारतीय दर्शन के उच्चतम स्तर पर अद्वैत वेदान्त सर्वमान्य सिद्धान्त के प्रतिपादक आचार्य शंकर के अनुसार ब्रह्म ही एक मात्र सत्ता है । जीव और ब्रह्म में अंश–अंशी सम्बन्ध है । ब्रह्म, जीव, जगत आदि रूपकों के माध्यम से बार–बार विरहानुभूतियों की अभिव्यक्ति रहस्यवादी व्यंजना है । महादेवी के गीतों में आया हुआ भावात्मक रहस्यवाद औपनिषदिक मान्यता से प्रभावित प्रतीत होता है –

आकुलता ही आज हो गई तन्मय राधा

विरह बना आराध्य द्वैत क्या कैसी बाधा

खोना पाना हुआ, जीत में हारें ही है

प्रिय–पथ के शूल फूल अलि प्यारे ही हैं ।'

(सांध्यगीत)

उपर्युक्त अंश में यद्यपि राधा का नामोल्लेख हुआ है किन्तु द्वैत की बाधा, खोना–पाना, जीत हार तथा प्रिय पथ के शूल का संकेत साधना पथ के कष्ट और जीव की महायात्रा से संबन्धित बिम्ब है ।

'असीम तेरा प्रकाश फिर कबीर जिस अंधकार से मुक्ति के लिए सतगुरू के ज्ञान का सहारा लेते हैं, महादेवी को वह प्रकाश प्रिय के स्मरण से प्राप्त होता है – धरती, आकाश तारें, इन्द्रधनुष, संध्या, उषा आदि सब अव्यक्त के विविध रूप हैं –

'जलते नभ में देख असंख्य, स्नेह हीन नित कितने दीपक,

जलमय सागर का उर जलता, विद्युत में घिरता है बादल ।'

आकाश के तारों की जलन, बादलों में विद्युतछटा, सागर के उर में विद्यमान बड़वाग्नि, पेड़ की हरित–शाखाओं द्वारा हृदयंगम किया जाने वाला तथा वसुधा के जड़ हृदय में भी अव्यक्त प्रिय की वेदना का रूप है । उनके गीतों में आगत विविध प्रतीक कबीर, जायसी, मीरा आदि कवियों के प्रतीकों से तुलनीय हैं ।

दर्शन का संबन्ध चिन्तन से किन्तु भावों का सम्बन्ध अनुभूतियों से होता है । महादेवी ने दार्शनिक विचारधारा का आत्मसात् कर अनुभूति से युक्त किया है ।

'जग अपना भाता है मुझे प्रिय पथ अपना भाता है

ये सोसे दे हंसकर सोते, वे दीपित दृग निसिभर रोते ।

तारों से सुकुमार तृणों का कब टूटा नाता है ?

हास में आँसू ढल जाता है ।

कवयित्री का जीवन दर्शन उसकी आस्था का सूचक है । 'रश्मि 'नीरजा एवं 'सांध्यगीत में आचार्य शंकर की अद्वैत वेदान्त की दार्शनिक रश्मियों अनुभव की जा सकती है । 'यामा में 'अपनी बात में वे कहती हैं – 'कवि का वेदान्त ज्ञान जब अनुभूतियों से रूप, कल्पना से रंग और भाव जगत के सौन्दर्य पाकर साकार होता है तब उसके सत्य में जीवन का स्पन्दन रहेगा, बुद्धि की तर्क शृंखला नहीं । अतः कलाकार के जीवन–दर्शन में हम उसका जीवन व्यापी दृष्टिकोण मात्र पा सकते हैं '

'हे सृष्टि प्रलय के आलिंगन

सीमा असीम के मूक मिलन

कहता है तुझको कौन छोर

तू चिर रहस्यमयी कोमलतर ।'

'सृष्टि प्रलय, 'सीमा–असीम आदि शब्द युग्म दर्शन से ग्रहण किये गये हैं। कहीं कहीं अणु परमाणु का भी संकेत मिलता है ।

महादेवी के गीतों में रहस्यवाद के साथ – साथ वेदना एवं करूणा का स्वरूप निर्मित करने में बौद्ध दर्शन का भी योगदान है। उनकी काव्य प्रवृत्तियों में दुःखवाद एवं वेदनावाद का सम्बन्ध रहस्य दर्शन से है। कवयित्री की व्यक्तिगत निराशा तथा सांसारिक प्रणय सम्बन्ध में असफलता ने दुःख की ओर प्रेरित किया । महादेवी का जीवन दर्शन निरपेक्ष रूप में भगवान बुद्ध की करूणा भावना है । सुख–दुःखात्मक रस को आस्वाद्य स्थिति के अनुरूप जीवन की दुःखात्मक अनुभूति में भी सुख की परिकल्पना महादेवी के जीवन दर्शन की विशेषता है जो उन्हें अन्य कवियों से अलग रखती है । बौद्ध दर्शन में दुःख निरोध, दुःख समुदाय, दुःख गामिनी प्रतिपदा का उल्लेख है जो महादेवी के गीतों में परिलक्षित होता है –

कौन मेरी कसक में नित मधुरता भरता अलक्षित

कौन प्यासे लोचनों में घुमड़ घिर झरता अपरिमित

स्वर्ण स्वप्नों का चितेरा, नींद के सूने निलय में

कौन तुम मेरे हृदय में ।

'रजत रश्मियों की छाया में धूमिल नभ सा वह आता

इस निदाघ से मानस में करूणा के स्रोत बहा जाता ।

दुःख के अनन्त दुकूल में अवगुण्ठित जीवन में सुख का भी स्थान है – वह एक ऐसा स्थान है जो वर्जिल के शब्दों में 'मदिरा के उन्माद' के क्षणिक अवसर सदृश है ।

'करूणामय को भाता है तम के परदे में आना

हे नभ की तारावलियों तुम पलभर को बुझ जाना ।'

उक्त पंक्तियों से ध्वनित होता है कि कवयित्री का प्रिय विरहिणी दुःखिनी, वेदनायुक्त प्रेयसि को दुख देने अवश्य आता है । रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गीतांजलि में कहा – 'आज मुझे अनुभव हुआ कि तुम मेरे इतने निकट क्यों हो ।' महादेवी का काव्य दर्शन ऐसे स्वर निनाद की झंकार लिये है ।

शेख 'सादी' ने लिखा है –

'तुम्हारे विरह की पीड़ा में कितना सुख था

हसी के घूंट पी पीकर मैं जी रहा था'

महादेवी के काव्य दर्शन में सूफी साधना भी परिलक्षित है । महादेवी लिखती है –

'विरह की घड़ियां हुई अलि मधुर मधु की यामिनी सी

साजनि अन्तर्हित हुआ है 'आज में धुँधला विकल 'कल' ।

आत्मिक पीड़ा और विश्व पीड़ा के अतिरिक्त सर्वात्म पीड़ा की तीसरी स्थिति जग से पार की अनुभूति है जिसे जायसी 'फना' होने की थिति कहते है।

महादेवी की काव्य चेतना पर योगिराज अरविन्द का नव्य वेदान्तवाद भी उल्लेखनीय है । अरविन्द दर्शन की प्रमुख चेतना जीव की जड़ से चित तक की महायात्रा है, सात सोपान है – जड़, मन, अतिमय, आनन्द, चित् और सत् । महादेवी ने अपने पथ को निर्वाण कहा है जो योगिराज की महायात्रा की ओर संकेत है । युग युग प्रतिक्षण, प्रतिदिन और प्रतिपल दीपक की लौ को जलाने वाली साधिका अरविन्द दर्शन से परिपुष्ट आत्मा की तरह है । कहीं कहीं – 'तुम मुझमें प्रिय फिर परिचय क्या' की स्थिति आत्मा का परमात्मा में परिवर्तन है । महायोगी का वैश्विक जगत महादेवी के 'उस पार' से तुलनीय है जो उनका निस्सीम का लोक है ।

महादेवी की रचनाओं की समीक्षा में उनके जीवन दर्शन के किसी एक पक्ष को प्रभावकारी सिद्ध करने हेतु रहस्यवाद, मानवतावाद आदि का उल्लेख किया जाता है । जीवन दर्शन से तात्पर्य कवयित्री के काव्य दर्शन की समग्रता से है जिसे निर्मित करने में उनका 'स्व' और 'पर' से सम्बन्ध प्रमुख है ।

रेनू दीक्षित

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डी०ए०–वी० कालेज,

कानपुर ।

छ. शा. जी. म. विश्वविद्यालय, कानपुर
आरोह तमसो ज्योति
C.S.J.M. UNIVERSITY, KANPUR